वर्तमान में हरिदासी सम्प्रदाय में निर्दिष्ट सांगीतिक पद-साहित्य का विश्लेषणात्मक अध्ययन

दयालबाग़ एजुकेशनल इन्स्टीट्यूट (डीम्ड विश्वविद्यालय)
दयालबाग़, आगरा, संगीत-विषय में पीएच. डी. की
उपाधि हेतु प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध की रूपरेखा

शोधकर्त्री

शिवांगी धनगर

शोध-निर्देशक

प्रो. सुधा सहगल
संगीत-विभाग (गायन)

संगीत-विभाग, कला-संकाय
दयालबाग एजुकेशनल इन्स्टीट्यूट (डीम्ड विश्वविद्यालय)
दयालबाग,आगरा -282005

2023

भूमिका

हरिदासी सम्प्रदाय भक्ति मार्ग की ओर उन्मुख होने वाला ऐसा सम्प्रदाय है जिनमें भक्ति, उपासना, पूजा, अर्चना के साथ साथ संगीत की प्रयुक्तिकरण इतना सशक्त है मानो भक्ति और संगीत का मिश्रण दुग्ध निखत हो। स्वामी हरिदासी जी ने कृष्ण भक्ति हेतु जो अतुलनीय योगदान दिया है वो शब्दों में व्यक्त नहीं किया जा सकता। उनके द्वारा रचित साहित्य ध्रुपद व पदों के रूप में ''केलिमाल, सिद्धान्त के पद'' ग्रन्थों में विद्यमान है। लगभग 100 ध्रुपद तथा 18 पद इन ग्रन्थों में संकलित हैं। जिनमें कृष्ण भक्ति के सभी कारक अनुसरणीय है एवं जो मूल रूप में सांगीतिक हैं। स्वामी जी ने अपने ग्रन्थों में अपनी सभी रचनाओं के लिए रागों एवं तालों का निर्दिष्ट किया है। जिन रागों एवं तालों का निर्देशन उनके ग्रन्थों में हुआ वे इस प्रकार हैं-

रागों में विभास, कल्याण, बिलावल, आसावरी इत्यादि तथा तालों में सूलताल, लक्ष्मीताल, रन्द्रताल, चैताल ब्रह्मतल आदि में गाए जाने का उल्लेख मिलता है। समी स्वामी जी ने वृन्दावन के पवित्र एवं कृष्णमय वातावरण में कृष्ण-भक्ति में लीन रहते हुए संगीत साधना की। ठाकुर सेवा के नित्य कर्म की उपासना के फलस्वरूप ही स्वामी जी ने बृज-भाषा में अनेक ध्रुवपद-रचनाओं का सृजन कर इन रचनाओं को शास्त्रोक्त रागों व तालों में तालबद्ध किया जो कि भारतीय संगीत के लिए आधारभूत व मौलिक सामग्री के रूप में प्रतिष्ठित हुई। स्वामी जी ने ईश्वरीय अनुकम्पा एवं ईश्वर प्रदत्त सृजनशीलता से अनेक ध्रुवपद-रचनाओं सहित बृज में प्रचलित रास लीलाओं में गेय रास के पदों को संगीतबद्ध किया जो वर्तमान में प्रचलित रास-लीलाओं में भी प्रयुक्त होते हैं। स्वामी हरिदास की सम्पूर्ण संगीत साधना श्री कृष्ण के सेवार्थ थी। आपने अपनी संगीत-साधना को कभी भी लाकिकोन्मुख करके पथ भ्रष्ट नहीं किया। स्वामी हरिदास संवत् 1664 विक्रम सन् 1607 में 95 वर्ष की आयु में भौतिक रूप से नाद ब्रह्म में लीन हो गए। भारतीय शास्त्रीय संगीत को इस अद्वितीय विभूति ने भारतीय संगीत को मौलिक व आधारभूत दिशा प्रदान की जो आज अपने वर्तमान में स्वामी हरिदास जी की परम्पराओं, घरानों वट वृक्ष की भांति एवं संगीत जगत में हमारे समक्ष है भारतीय संगीत में प्रतिष्ठित अनेक गायन शैलियाॅं अमूल्य व अतुलनीय धरोहर की भाति स्वामी हरिदास जी की ही देन है।

स्वामी हरिदास जी ने अपने ग्रन्थें में लगभग सभी रचना ओं को रागाधारित किया है भले ही वे ध्रुवपद, धमार अथवा पद हों। शोधकत्री जब स्वामी हरिदास जी के ग्रन्थों का पठन-पाठन किया तो यह ज्ञात हुआ कि लगभग सभी रचनाऐं

किसी न किसी विशिष्ट राग पर आधारित है। इन निर्दिष्ट रागाधारित पदों का क्रियात्मक स्वरूप जानने के लिए शोधकत्री ने सर्वेक्षण किया तथा हरिदासी सम्प्रदाय का भ्रमण कर विभिन्न सूचनायें एकत्रित की किन्तु शोधकत्री को आश्चर्य हुआ जब यह पाया कि निर्दिष्ट राग अनुसार गायन नहीं हो रहा है तो सुनिश्चित ही है कि स्वामी हरिदास जी जैसे भक्त सन्त कवि जब संगीत के किसी नियम का प्रतिपादन करते हैं तो उसके पीछे कुछ कारण अवश्य होते हैं। उन्होंने रागों का आध्यात्मिक मर्म व रहस्य भी जाना अतः तदानुसार रागों को निर्दिष्ट किया किन्तु यह सुनिश्चित ही है कि उनके द्वारा प्रतिपादित पद संगीत के नियमानुसार आज पालित नहीं हो रहे हैं। साथ ही साथ स्वामी हरिदास जी के सांगीतिक व साहित्यिक योगदान को गहनता से समझने के लिए साहित्य का सर्वेक्षण भी किया गया जो इस प्रकार हैः-

<u>पुस्तकें-</u>

- मध्ययुगीन वैष्णव सम्प्रदायों में संगीत, डा0 राकेश बाला सक्सेना, राधा पब्लिकेशन, प्रथम संसकरण, 1990
- ब्रज संस्कृति में संगीत, अंजू शर्मा, राधा पब्लिकेशन्स नई दिल्ली, प्रथम संस्करण, 1996
- स्वामी हरिदास जी जीवन और वाणी, प्रभुदयाल मीतल, प्रकाशन साहित्य संस्थान, मथुरा, प्रथम संस्करण, 2018
- संत साहित्य की लौकिक पृष्ठभूमि , डा ओमप्रकाश शर्मा, हिन्दुस्तानी अकादमी, इलाहाबाद, संस्करण, प्रथम वर्ष।
- कृष्ण दास: प्रधान सम्पादक गो-क्षी ब्रजभूषण शर्मा, प्रो0 कष्ठमणि शास्त्री, विद्या विभाग, काकरौली, प्रथम संस्करण, सम्वत 2019।

<u>शोध प्रबन्ध</u>

- ब्रज के भक्ति सम्प्रदायों का समाज गायन - अंजू शर्मा, गाइड - डाॅ0 श्रीमती मणि शर्मा 1991,
- मध्यकालीन भक्ति कवियों के पदों का शास्त्रीय संगीत की विभिन्न शैलियों में समावेश एवं योगदान एक विवेचनात्मक अध्ययन- श्रीमती रूपम वाजपेयी , गाइड - डाॅ0 (श्रीमती) रेनू निगम (2012) छत्रपति शाहू जी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर।
- ब्रज में विकसित चैतन्य सम्प्रदाय में संगीत नीलम साम्भीर राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर (1990)

लघु शोध प्रबन्ध

1. मथुरा - वृन्दावन के गोड़ीय सम्प्रदाय में निर्वाहित संगीतात्मक शैलियों का अध्ययन - दिव्या डागौर , डा0 (श्रीमती) सुधा सहगल 2011

2. निम्बार्क सम्प्रदाय के संगीत का वर्तमान स्वरूप एक विश्लेषणात्मक अध्ययन - कनिका गोस्वामी, डा0 (श्रीमती) सुधा सहगल (2014)

3. स्वामी हरिदास कृति सिद्धान्त के पद व उनमें निहित सांगीततिक तत्व - शिवांगी धनगर, डॉ0 (श्रीमती) सुधा सहगल 2020

पत्र-पत्रिकाएं

1. संगीत मासिक पत्रिका - सितम्बर 2016

   श्री स्वामी हरिदास जी का समय कुल और सम्प्रदाय - प्रो0 चिन्तामणि शुक्ल।

2. संगीत मासिक पत्रिका - जुलाई 1998

   भारत की संगीत परम्परा का मूल स्त्रोत: ब्रज संगीत और उसका आधार।

उपरोक्त सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण करने के पश्चात् शोधकत्री को यह ज्ञात हुआ कि स्वामी हरिदास जी के जीवन, साहित्यिक रचनाओं व अनुभवों पर तो साहित्य प्रचुर मात्रा में उपलब्ध होता है। किन्तु सांगीतिक स्तर पर सामग्री अत्यन्त अल्प है। यदि सांगीतिक पक्ष पर कुछ सामग्री प्राप्त भी होती है तो वह केवल रागों का उल्लेख मात्र करती है। किसी भी साहित्य में रागों के क्रियात्मक प्रयुक्तिकरण का उल्लेख प्राप्त नहीं होता कि उनके समय में हरिदास जी के सांगीतिक पदों में रागों को किस प्रकार प्रयुक्त किया जाता था। हरिदासी वृन्दावन परम्परा में सभी पक्ष खोजे गये किन्तु शोधकत्री को निर्दिष्ट रागों के अनुसार स्वलिपियां तथा रागानुसार गायन प्राप्त नहीं हुआ।

अस्तु स्वामी हरिदास जी के सांगीतिक योगदान, राग निर्देशन तथा ताल निर्देशन को समझ कर रागानुसार स्वरांकन कर सम्प्रदाय विशेष तथा अपने शोध को नवीन आयाम देना शोधकत्री का लक्ष्य है।

अतः स्वामी हरिदास जी के द्वारा रचित साहित्य में निहित सांगीतिक पक्ष को जानने, सीखने व रचनात्मक कार्य करने की दृष्टि से निम्न विषय का चयन किया गया है -

<u>विषय कथन -</u>

"वर्तमान में हरिदासी सम्प्रदाय में निर्दिष्ट सांगीतिक पद साहित्य का विश्लेषणात्मक अध्ययन"

<u>प्रयुक्त शब्दों की व्याख्या</u>

- सम्प्रदाय (संज्ञा, एकवचन, पु0)

-विशेष मत मार्ग, धर्म सम्बन्धी मत

(राजपाल हिन्दी शब्दकोश)

-निर्दिष्ट (क्रिया, एकवचन)

- निश्चित किया हुआ, बतलाया हुआ

(आदर्श हिन्दी शब्दकोष)

सांगीतिक - (क्रिया एकवचन)

- संगीत का या संगीत सम्बन्धित।

(मानक विशाल हिन्दी शब्दकोष)

पद साहित्य - (संज्ञा, एकवचन)

-लिपिबद्ध विचार ग्रन्थों का समूह गद्यात्मक या पद्यात्मक रचना।

(राजपल हिन्दी शब्दकोष)

विश्लेषणात्मक (वि.वचन)

- जाच करना - छान बीन करना, विश्लेषण करना।

(मानक विशाल हिन्दी शब्दकोष)

अध्ययन - (क्रिया एकवचन)

- पढाई करना

(राजपाल हिन्दी शब्दकोष)

<u>अध्ययन का महत्व -</u>

प्रस्तावित शोध का महत्व इसके क्रियात्मक पक्ष में है। हरिदास जी के पद साहित्य का विवरण प्रचुर मात्रा में उपलब्ध है किन्तु रागों का क्रियात्मक पक्ष एवं राग प्रयोग साहित्य पक्ष का प्रयोग कहीं नहीं होता। अतः प्रस्तावित शोध अपने क्रियात्मक पक्ष को उजागर करने के कारण महत्वपूर्ण सिद्ध होगा।

<u>अध्ययन की आवश्यकता</u>

प्रस्तावित शोध की आवश्यकता इसमें दिये जाने वाले क्रियात्मक पक्ष में होगी प्रस्तावित शोध का क्रियात्मक पक्ष प्रकाश में लाने के लिए अत्यन्त आवश्यक है जो वर्तमान में अप्रकाशित है।

<u>अध्ययन के उद्देश्य</u>

1. स्वामी हरिदास जी के जीवन, सांगीतिक योगदान एवं ग्रन्थों का अध्ययन करना।

2. स्वामी हरिदासी जी के ग्रन्थों में निर्दिष्ट रागों का अध्ययन व विश्लेषण कर निर्देशन के अनुसार स्वरांकन करना।

3. हरिदासी सम्प्रदास के विद्वान कलाकारों से साक्षात्मकार करना।

4. हरिदासी सम्प्रदाय की वर्तमान सांगीतिक स्थिति का आंकलन करना तथा परिवर्तनों को उजागर करना विभिन्न स्त्रोतों से एकत्रित करना।

<u>कार्य विधि व उपकरण</u>

प्रस्तावित शोध हेतु व्याख्यात्मक विधि व प्रश्नावली व साक्षात्कार जैसे उपकरणों का प्रयोग किया जायेगा। लेपटाप, केमरा, वीडियो कैमरा जैसे इलैक्ट्रानिक उपकरणों का प्रयोग भी किया जायेगा तथा सांगीतिक उपकरणों, जैसे - हारमोनियम, तबला, इत्यादि का प्रयोग भी किया जायेगा।

<u>परिसीमांकन</u>

कार्य एवं समय की सीमा को देखते हुये केवल हरिदासी सम्प्रदाय वृन्दावन पर ही शोध को केन्द्रित किया जायेगा। इनकी उपशाखाओं को अध्ययन के लिये केन्द्रित नहीं किया जायेगा।

<u>अध्यायों का विभाजन</u>

प्रथम अध्याय

स्वामी हरिदास जी का जीवन परिचय व सांगीतिक योगदान

द्वितीय अध्याय

स्वामी हरिदास जी का सम्पूर्ण पद साहित्य

तृतीय अध्याय

स्वामी हरिदास जी के पद साहित्य में सांगीतिक निर्देशन

चतुर्थ अध्याय

(1) हरिदासी सम्प्रदाय की वर्तमान सांगीतिक स्थिति

(2) हरिदासी सम्प्रदाय में हुए परिवर्तनों के विभिन्न कारण

पंचम अध्याय

(1) स्वामी हरिदास जी द्वारा पद-साहित्य में निर्देशित राग-ताल विश्लेषण

(2) वर्तमान में हरिदासी सम्प्रदाय में निर्देशानुसार अपेक्षित रचनात्मक कार्य के विभिन्न स्वरूप

षष्ठम् अध्याय

स्वामी हरिदास द्वारा निर्दिष्ट रागानुसार पद साहित्य का शोधकत्री द्वारा स्वरलिपि निर्माण

निष्कर्ष

सन्दर्भ ग्रन्थसूची

रूपरेखा निर्मित करने से पूर्व विभिन्न विद्वानों व कलाकारों से पूंछी गई प्रश्नावली

<u>**प्रश्नावली**</u>

1. हरिदासी सम्प्रदाय पद साहित्य के अन्तर्गत किन-किन रागों व तालों का प्रयोग हुआ?

2. पद साहित्य के पद में क्या अवेषित करना आवश्यक होता है?

3. रागों की प्रकृति का पद साहित्य से कोई सम्बन्ध होता है?

4. क्या हरिदास जी के पद-साहित्य में रागों के भाव व प्रकृति का ध्यान रखा गया?

5. हरिदास जी के पद-साहित्य को कैसे सूक्ष्म निरीक्षित किया जा सकता है?

6. क्या गायक - समूह भारतीय संगीत में शिक्षित है?

7. क्या गायक-समूह को निर्दिष्ट रागों की पूर्णतया जानकारी है?

8. क्या निर्दिष्ट रागों के अनुसार वर्तमान में हरिदास जी के सम्प्रदाय में गायन हो रहा है?

9. स्वामी हरिदास जी के काल में संगीत का विकास कैसे हुआ?

10. हरिदासी सम्प्रदाय के पद साहित्य का सांगीतिक स्वरूप क्या है?

11. सांगीतिक पद साहित्य किस प्रकार की विद्या है?

12. पद साहित्य से आप क्या समझते है?

13. हरिदासी सम्प्रदाय में संगीत की क्या दशा थी?

14. हरिदासी सम्प्रदाय के सांगीतिक पद साहित्य में रागो के चयन का क्या सिद्धान्त है?

15. गायन व वादन का मिश्रण इस सांगीतिक पद साहित्य में किस प्रकार होता है?

16. क्या सभी प्रकार के सांगीतिक पद साहित्य में सभी रागों का प्रयोग किया जा सकता है?

17. सागीतिक पद साहित्य में रागों की रचनाआऐं को कैसे रचित किया जाता है?

18. सांगीतिक पद साहित्य में किन-किन रागों को प्राथमिकता दी जाती है?